दैनिक भारत कि

तामीर

संपादक - काझी मकदूम शफीउद्दीन hinditameer@gmail.com

बीड (महाराष्ट्र) | वर्ष-१ ला | अंक-२६१ वा | सोमवार २१ एप्रिल २०२५ | RNI TITLE CODE:MAHHIN11405/120/1/3/2024 | किमत : २ रूपये | पन्ने - ४

रणजित कासलें पर तीसरा मामला दर्ज - व्यवसायी से ६ लाख रुपये लेने का आरोप

अंबाजोगाई से दर्ज की गई शिकायत

। बीड़, प्रतिनिधि । २१ अप्रैल २०२५

बीड़ शहर पुलिस द्वारा निलंबित पुलिस उपनिरीक्षक रणजित कासलें के खिलाफ तीसरा आपराधिक मामला दर्ज किया गया है। इस बार अंबाजोगाई के एक व्यवसायी से ६ लाख रुपये लेने के आरोप में यह मामला दर्ज हुआ है। पीड़ित व्यवसायी ने आरोप लगाया है कि रणजित कासलें ने एक केस को रफा-दफा करने और पैसे वापस दिलाने के बहाने उनसे यह रकम ली, लेकिन पैसे भी नहीं लौटाए और मामला भी नहीं सुलझाया।

पैसे लेकर भी नहीं किया समाधान

जानकारी के अनुसार, पीड़ित व्यवसायी ने पहले बीड़ शहर में एक प्रॉपर्टी संबंधित मामला सुलझाने के लिए रणजित कासलें से संपर्क किया था। कासलें ने भरोसा दिलाया कि वह पैसा वापस दिला देंगे और केस को भी संभाल लेंगे। इसके बदले में उन्होंने ६ लाख रुपये की मांग की थी, जो पीड़ित ने किस्तों में दिए। लेकिन कई महीनों बाद भी पैसे वापस नहीं मिले और केस भी वैसा ही रहा।

अंबाजोगाई पुलिस स्टेशन में दर्ज हुआ मामला

व्यवसायी ने आखिरकार अंबाजोगाई पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के अनुसार, कासलें ने बार-बार पैसे मांगने पर जान से मारने की धमकी भी दी। अंबाजोगाई पुलिस ने अब रणजित कासलें पर धोखाधड़ी और धमकाने का मामला दर्ज किया है।

पहले भी हो चुके हैं गंभीर आरोप

रणजित कासलें पर पहले भी गंभीर आरोप लग चुके हैं। बीते कुछ महीनों में उन पर दो अन्य मामले भी दर्ज हो चुके हैं, जिसमें लोगों को झूठे मामलों में फँसाने, धमकी देने और पैसे लेने के आरोप शामिल हैं।

ईमेल और वीडियो के आधार पर कार्रवाई

बताया जा रहा है कि व्यवसायी ने इस पूरे घटनाक्रम के वीडियो और ईमेल भी पुलिस को सौंपे हैं, जिसके आधार पर यह तीसरा मामला दर्ज किया गया है। फिलहाल, कासलें की जांच जारी है और पुलिस उन्हें हिरासत में लेने की तैयारी में है।

प्राथमिक स्तर से हिंदी भाषा की अनिवार्यता पर सरकार ने लिया यू-टर्न!

मुख्यमंत्री फडणवीस ने दिए वैकल्पिक भाषा देने के संकेत

रिपोर्ट: जमीर काज़ी, मुंबई

राज्य सरकार द्वारा पहली कक्षा से तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को अनिवार्य करने के निर्णय पर राज्यभर से तीव्र प्रतिक्रिया आने के बाद अब सरकार ने एक कदम पीछे हटने का निर्णय लिया है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने रविवार को स्पष्ट किया कि अब सरकार इस पर विचार कर रही है कि तीसरी भाषा के रूप में हिंदी के अलावा कोई अन्य वैकल्पिक भाषा दी जा सकती है या नहीं। इससे बीते कुछ दिनों से चल रहा विवाद थमने के संकेत मिल रहे हैं।

इस शैक्षणिक वर्ष से पहली कक्षा से तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को अनिवार्य करने का निर्णय राज्य सरकार ने लिया था। लेकिन इस पर विपक्ष, मनसे, तथा राज्य की विभिन्न मराठी भाषाप्रेमी संस्थाओं और संगठनों ने कड़ा विरोध जताया। इस मुद्दे पर लंबे समय से राजनीतिक रूप से अलग रहे उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे के फिर से एक मंच पर आने की संभावना भी जताई जा रही है।

राज ठाकरे ने शनिवार को एक पॉडकास्ट इंटरव्यू में इस विषय पर इशारा किया, और उसके बाद उद्धव ठाकरे की ओर से भी सकारात्मक प्रतिक्रिया सामने आने के बाद, महाराष्ट्र की राजनीति में दोनों ठाकरे बंधुओं के पुनः एकत्र आने की चर्चा जोरों पर है। इस पृष्ठभूमि में आगामी स्थानीय स्वराज्य संस्था (स्थानीय निकाय) चुनावों पर इस निर्णय का प्रभाव पड़ने की संभावना जताई जा रही है।

मुख्यमंत्री फडणवीस ने कहा कि सरकार अब इस बात पर विचार कर रही है कि तीसरी भाषा के रूप में हिंदी की अनिवार्यता न रखते हुए, दूसरी वैकल्पिक भाषाओं को विकल्प के रूप में दिया जाए।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह निर्णय राज्य की नई शिक्षा नीति की सिफारिश पर आधारित था, क्योंकि अन्य भाषाओं के शिक्षकों की तुलना में हिंदी भाषा के शिक्षक अधिक उपलब्ध हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार अब यह निर्णय वापस ले रही है और हिंदी भाषा को तीसरी भाषा के रूप में अनिवार्य नहीं किया जाएगा। छात्रों को अन्य वैकल्पिक भाषाओं का विकल्प दिया जाएगा, लेकिन इसके लिए कुछ शर्तें और नियम तय किए जाएंगे। हालांकि, मराठी भाषा की अनिवार्यता राज्य में बनी रहेगी।

राज्य सरकार के इस फैसले का राज्य के मराठी भाषाविदों, सामाजिक संस्थाओं और भाषा विशेषज्ञों ने विरोध किया था। उनका कहना था कि इस निर्णय से मराठी भाषा पर हिंदी का आक्रमण हो रहा है।

मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने इस पर विरोध दर्ज किया था और कहा था कि हिंदी भाषा की अनिवार्यता स्वीकार नहीं की जा सकती। इसके बाद शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने भी कहा था कि हिंदी सीखने में कोई हर्ज नहीं, लेकिन उसे थोपना ठीक नहीं।

शेख निज़ामने बेघर आश्रयगृह में अन्नदान कर मनाई हैरिसन फ्रान्सिस रेड्डी की पुण्यतिथि

बीड (प्रतिनिधि):

राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजित पवार गुट) के नेता शेख निज़ाम ने एआईएमआईएम के दिवंगत जिला प्रवक्ता हैरिसन फ्रान्सिस रेड्डी की चौथी पुण्यतिथि शहर के बेघर निवारागृह (आश्रयगृह) में अन्नदान कर मनाई। इस अवसर पर राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के साथ पुलिस अधिकारी भी उपस्थित थे।

हैरिसन फ्रान्सिस रेड्डी शुरू से ही सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय रहते थे। वे जनहित के मुद्दों को बेबाकी से उठाते थे। उनका वक्तृत्व शैली प्रभावशाली, स्पष्टवक्ता और आक्रामक थी। उनकी इस शैली से प्रभावित होकर एआईएमआईएम के तत्कालीन बीड जिला अध्यक्ष शेख निज़ाम ने उन्हें पार्टी में शामिल किया था। इसके बाद उन्हें पहले प्रवक्ता और फिर मुख्य जिला प्रवक्ता का पद भी सौंपा गया।शेख निज़ाम के प्रयास से रेड्डी को पार्टी में बड़ा मंच मिला और उन्होंने अपने बुलंद भाषणों से स्थापित राजनैतिक वर्ग को चुनौती दी। शेख निज़ाम के जिला अध्यक्ष पद से हटने के बाद भी रेड्डी पार्टी के मुख्य प्रवक्ता के रूप में कार्यरत रहे और मृत्यु तक अपने पद पर कायम रहे। एक बड़े पद पर रहते हुए भी रेड्डी जमीन से जुड़े इंसान थे।

उनकी पुण्यतिथि के अवसर पर शेख निज़ाम ने २० अप्रैल २०२५, रविवार की शाम शहर की भाजी मंडई क्षेत्र के बेघर आश्रयगृह में अन्नदान कर उनकी याद में यह कार्यक्रम आयोजित किया।इस मौके पर शेख निज़ाम, पुलिस उपनिरीक्षक विजय जाधवर, पुलिस उपनिरीक्षक वासुदेव मिसाळ, मोमिन जुबैर, सय्यद आज़म, सायमन रेड्डी, वंचित बहुजन अघाड़ी के युवा नेता रहमत पठान, राष्ट्रवादी कांग्रेस (अजित पवार गुट) के युवा नेता फारूक शेख, बेघर आश्रयगृह के संचालक अभिजीत वैद्य, व्यवस्थापक राजू वंजारे, स्वतंत्र पत्रकार एस.एम. युसूफ, आश्रयगृह की महिलाएं, पुरुष, वृद्ध नागरिक तथा अन्य सामाजिक, राजनीतिक और पुलिस अधिकारी उपस्थित थे।सभी उपस्थित लोगों ने हैरिसन फ्रान्सिस रेड्डी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

गेटवे ऑफ इंडिया पर गूंजा संविधान का जागर!

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की १३४ वीं जयंती पर विशेष आयोजन

विशेष प्रतिनिधि, मुंबई:

भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की १३४वीं जयंती और संविधान अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 'जागर संविधानाचा' कार्यक्रम रविवार को ऐतिहासिक गेटवे ऑफ इंडिया पर, अरब सागर की साक्षी में हजारों नागरिकों की उपस्थिति में भव्य रूप से आयोजित किया गया।

इस भव्य समारोह में महाराष्ट्र के सांस्कृतिक कार्य मंत्री आशिष शेलार प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। महाराष्ट्र शासन के सांस्कृतिक कार्य विभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में विधानसभा अध्यक्ष राहुल नार्वेकर, विधायक संजय उपाध्याय, मुख्य सचिव सुजाता सौनिक, पूर्व मंत्री भाई गिरकर, पूर्व मंत्री राज पुरोहित, सांस्कृतिक कार्य विभाग के अपर मुख्य सचिव विकास खारगे तथा विभाग के संचालक विभूषण चावरे प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

मंत्री आशिष शेलार ने अपने संबोधन में कहा, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर पर आधारित यह संगीतमय कार्यक्रम केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं बल्कि सामाजिक चेतना जाग्रत करने वाला एक महत्त्वपूर्ण अवसर है। बाबासाहेब द्वारा दिए गए मूल्य, सिद्धांत और विचार पूरी दुनिया को मार्गदर्शन देने वाले हैं और उन्हें वैश्विक मंचों तक पहुंचाया जाएगा। अमेरिका और यूरोप के विश्वविद्यालयों में इस विषय पर शोध पत्र और चर्चासत्र आयोजित किए जाएंगे।

उन्होंने आगे बताया कि संविधान के ७५ वर्ष पूर्ण होने पर सांस्कृतिक विभाग द्वारा यह आयोजन संविधान की महत्ता को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से किया जा रहा है। इसके अंतर्गत राज्य भर में चर्चासत्र, उद्देशिका का वाचन तथा घर-घर संविधान जैसे कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है।

इस अवसर पर मुख्य सचिव सुजाता सौनिक और अपर मुख्य सचिव विकास खारगे ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन सुप्रसिद्ध अभिनेता सुबोध भावे ने किया।

लाड़ली बहेन का ऐसा भी अंजाम मां का ख़त सरकार के नाम।

बीड, प्रतिनिधि:

बीड जिले में महिलाओं के खिलाफ अपराधों में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। एक युवती ने छेड़छाड़ और ब्लैकमेलिंग से परेशान होकर आत्महत्या कर ली। यह मामला शहर के कांबळे परिवार की बेटी से जुड़ा है। पीड़िता की मां ने राज्य के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को पत्र लिखकर न्याय की गुहार लगाई है।

पत्र में पीड़िता की मां ने लिखा है,

साहब, मैं आपकी लाड़ली बहन हूं। मुझे आपने हमेशा बहन जैसा सम्मान और सहारा दिया। आप मुख्यमंत्री बनें, तब से मैं खुद को गर्व से आपकी बहन कहती आई हूं। लेकिन आज मैं दुखी हूं। मैंने अपनी बेटी को खो दिया है।

मेरी बेटी को ब्लैकमेल कर परेशान किया गया। वह बार-बार कहती थी कि साहब की लाड़ली बहन की बेटी होने के बावजूद उसे न्याय नहीं मिलेगा। उसने मुझे बताया था कि उसे लगातार छेड़ा और बदनाम किया जा रहा है।

साहब, मेरी बेटी ने यह सब सहन नहीं कर पाई और १४ मार्च को उसने अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। अब मैं आपसे न्याय की उम्मीद कर रही हूं। मेरी बेटी को न्याय मिले, यही मेरी अंतिम प्रार्थना है।

सभी शासक ही स्वतंत्रता के हत्यारे हैं १८ जून-काला दिवस

अमर हबीब, आंबाजोगाई

किसानपुत्र आदिलन

मो.नं: ८४११९०९९०९

आज जो भारत का नक्शा हमें दिखाई देता है, वह अंग्रेजों के आने से पहले कभी अस्तित्व में नहीं था। पहली बार ब्रिटिश शासन के दौरान पूरे देश के लिए समान भारतीय दंड संहिता लागू हुई। जब अंग्रेज गए, तब भारत को अपना पहला संविधान मिला। उस समय भारत में सिर्फ दो-चार नहीं, बल्कि पाँच सौ से अधिक रियासतें थीं, जिनका शासन पूरी तरह मनमानी पर आधारित था। वहाँ राजा का आदेश ही कानून होता था। यह सारी अराजकता भारतीय संविधान ने खत्म की। राष्ट्र की एकता की भावना महात्मा गांधी ने पैदा की और संविधान ने देश के शासन को व्यवस्थित करने की रूपरेखा बनाई, साथ ही देश के नागरिकों के मौलिक अधिकारों (स्वतंत्रता) की गारंटी भी दी। यह एक ऐतिहासिक घटना है। मेरा विश्वास है कि भारत के मूल संविधान में किसानों के साथ कोई भेदभाव नहीं था, सभी को समान अधिकार दिए गए थे।

दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि

संविधान लागू होने के मात्र डेढ़ वर्ष बाद ही, मौलिक अधिकारों की सुरक्षा करने वाले इस संविधान में पहली बार संशोधन किया गया, और किसानों के मौलिक अधिकार छीन लिए गए। अनुच्छेद ३१ ए और बी में संशोधन करके एक नया परिशिष्ट - परिशिष्ट ९ जोड़ा गया, जिसमें डाले गए कानूनों को न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती - यह प्रावधान किया गया। इतना ही नहीं, यदि इन कानूनों से मौलिक अधिकारों का उल्लंघन भी हो रहा हो, तो भी अदालतें हस्तक्षेप नहीं कर सकतीं - ऐसा स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया।

इस संशोधन (या कहें कि यह संविधान का बिगाड़ था) का सबसे बड़ा नुकसान किसानों को हुआ। सीलिंग और आवश्यक वस्तु अधिनियम जैसे कानून जो किसानों को गुलाम बनाने वाले हैं, परिशिष्ट ९ के चलते आज भी वैध हैं। आज इस परिशिष्ट में कुल २८४ कानून हैं, जिनमें से लगभग २५० कानून केवल खेती और किसानों से जुड़े हैं। परिशिष्ट ९ ने भारत और इंडिया - दो अलग-अलग वर्ग बना दिए। इन्हीं कानूनों के कारण किसान आत्महत्या करने को मजबूर हुए। अब तक ५ लाख से अधिक किसान आत्महत्या कर चुके हैं।

अनुच्छेद १३ भारतीय संविधान में मौलिक अधिकारों का सुरक्षा कवच था। हमारे संविधान निर्माताओं ने इसे जानबूझकर संविधान में शामिल किया था। लेकिन आपातकाल के दौरान इसमें एक छोटा सा संशोधन करके यह कहा गया कि अनुच्छेद ३६८ के अंतर्गत किए गए संशोधनों पर अनुच्छेद १३ लागू नहीं होगा। इस प्रकार यह सुरक्षा कवच भी निष्प्रभावी बना दिया गया।

बाद में जो जनता सरकार सत्ता में आई (जिसमें वामपंथी और दक्षिणपंथी दोनों शामिल थे), उन्होंने आपातकाल के कई अन्य संशोधनों को रद्द किया, लेकिन इस संशोधन को नहीं हटाया। इससे यह स्पष्ट होता है कि वामपंथी हों या दक्षिणपंथी - सभी राजनीतिक दल किसानों के हत्यारे हैं। ये सभी देश के नागरिकों की स्वतंत्रता पर हमला करने वाले हैं।

किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में रचनात्मक लोगों के लिए स्वतंत्रता का महत्व अधिक होता है। स्वतंत्रता का ह्रास रचनात्मकता को नष्ट कर देता है। यही कारण है कि मैं, जैसे एक लेखक, इस मुद्दे को लेकर व्यथित होता हूँ।

यदि आप भी व्यथित हैं, तो आइए १८ जून को काला दिवस के रूप में मनाएं। मैं इसे किसान परतंत्रता दिवस कहता हूँ। आइए, इस दिन हम संकल्प लें कि इस देश के नागरिकों के खोए हुए मौलिक अधिकारों को फिर से स्थापित करेंगे।

उर्दू दैनिक तामीर के २५ वे साल में क़दम रखने पर एक और पेशकश

विश्व वसुंधरा दिवस पर विशेष राज्य स्तरीय अभियान: 'पर्यावरण बचाओ, वसुंधरा सजाओ' में सभी की सहभागिता ज़रूरी-मंत्री पंकजा मुंडे

२२ अप्रैल से १ मई २०२५ तक महाराष्ट्र में विभिन्न पर्यावरणीय उपक्रमों का आयोजन

मुंबई, २० अप्रैल – पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन विभाग की ओर से २२ अप्रैल, २०२५ (विश्व वसुंधरा दिवस) से लेकर १ मई, २०२५ (महाराष्ट्र दिवस) तक 'पर्यावरण बचाओ, वसुंधरा सजाओ' अभियान राज्यभर में चलाया जाएगा। पर्यावरण मंत्री पंकजा मुंडे ने सभी नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, सरकारी अधिकारियों, सामाजिक संस्थाओं और स्वयंसेवकों से इस अभियान में भाग लेने की अपील की है।

मंत्री पंकजा मुंडे इस अभियान की शुरुआत २२ अप्रैल को मुंबई के पवई तालाब पर स्वच्छता अभियान में स्वयं भाग लेकर करेंगी।

नवरात्र की तरह मनाया जाएगा वसुंधरा पर्व

मंत्री मुंडे ने बताया कि जैसे हम नवरात्र में देवी के विभिन्न रूपों की पूजा करते हैं, वैसे ही ९ दिनों तक धरती माता (वसुंधरा) की आराधना स्वरूप पर्यावरण संबंधी कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। २२ अप्रैल से शुरू होकर यह अभियान १ मई तक चलेगा, जिसमें हर दिन कोई न कोई सार्थक पहल की जाएगी।

२२-२४ अप्रैल: जलस्रोतों की सफाई अभियान

इस दौरान गांव, शहर, तालुका और जिलों में नदियों, नालों, तालाबों और अन्य जल स्रोतों की सफाई की जाएगी। ग्रामसेवक से लेकर जिला परिषद सीईओ, तलाठी से लेकर जिलाधिकारी, सरपंच से लेकर जिला परिषद अध्यक्ष, विधायक, सांसद और संपर्क मंत्री तक सभी जनप्रतिनिधियों को इस अभियान में भाग लेने की अपील की गई है।

२५-२७ अप्रैल: 'रीड्यूस, रीयूज और रिसायकल' पर आधारित गतिविधियाँ

इस चरण में राज्यभर में 'ठशर्वीलश, ठशीश, ठशलूलश्रश' सिद्धांतों पर आधारित उपक्रम चलाए जाएंगे। प्लास्टिक और अन्य प्रदूषणकारी वस्तुओं का कम से कम उपयोग (ठशर्वीलश), पुनः उपयोग योग्य वस्तुओं का दोबारा उपयोग (ठशीश), और जल व अन्य वस्तुओं का पुनर्चक्रण (ठशलूलश्रश) करने पर जोर दिया जाएगा। जो संस्थाएं और व्यक्ति इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करेंगे, उन्हें १ मई को जिला स्तर और राज्य स्तर पर सम्मानित किया जाएगा।

२८-३० अप्रैल: स्लोगन प्रतियोगिता

इन तीन दिनों में 'पर्यावरण बचाओ, वसुंधरा सजाओ' अभियान के अंतर्गत पूरे राज्य में स्लोगन प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी। प्रत्येक जिले से तीन सर्वश्रेष्ठ घोषवाक्य राज्य स्तर पर भेजे जाएंगे। उनमें से राज्य स्तर के तीन उत्कृष्ट स्लोगनों का चयन कर उन्हें पर्यावरण विभाग की प्रचार सामग्री और विज्ञापनों में शामिल किया जाएगा। महाराष्ट्र दिवस के अवसर पर इन्हें सम्मानित किया जाएगा।

१ मई – महाराष्ट्र दिवस पर सम्मान समारोह

राज्य भर से चुने गए उत्कृष्ट प्रयासों का चयन कर उन्हें महाराष्ट्र दिवस के दिन संपर्क मंत्री के हाथों सम्मानित किया जाएगा। इन नवाचारों का उपयोग आगामी योजनाओं और अभियानों में किया जाएगा।

जनसहभाग से ही अभियान की सफलता संभव – मुंडे

मंत्री मुंडे ने कहा कि यह केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है। वसुंधरा माता की रक्षा और साज-सज्जा के लिए जनभागीदारी ज़रूरी है। सभी विभागों को अभियान को सफल बनाने हेतु दिशा-निर्देश भेजे जाएंगे।

मंत्री ने अंत में सभी नागरिकों से आग्रह किया कि वे इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लें और इस मिशन को सफल बनाएं।

सभी जातियों और धर्मों को साथ लेकर चलने वाला है वारकरी संप्रदाय - महंत शिवाजी महाराज

मराठवाड़ा के महत्वपूर्ण मुद्दों के लिए आगामी राजनीतिक यात्रा–पूर्व मंत्री जयदत्त क्षीरसागर

नवगण राजुरी, २० अप्रैल (प्रतिनिधि):

धन कमाने की अपेक्षा बच्चों में अच्छे संस्कार डालना अधिक आवश्यक है क्योंकि आज के बच्चे ही कल के राष्ट्र की असली संपत्ति हैं। मराठवाड़ा संतों की भूमि है और वारकरी संप्रदाय ऐसा है जो सभी जाति-धर्मों को साथ लेकर चलता है। यह विचार श्री क्षेत्र नारायणगड संस्थान के मठाधिपति महंत शिवाजी महाराज ने व्यक्त किए।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री जयदत्त क्षीरसागर ने कहा कि जरूड से सिरसाळा तथा शिरापूर फाटा से सौताडा तक दो प्रमुख सड़कों के लिए सरकार से अनुवर्तन किया गया था, जिसे स्वीकृति भी मिल चुकी है। जल्द ही निविदा प्रक्रिया के बाद यह सड़क निर्माण कार्य पूरा होगा जिससे आवागमन में सुविधा प्राप्त होगी।

यह कार्यक्रम स्व. सौ. सुरेखाताई रविंद्र क्षीरसागर की तृतीय पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में नवगण राजुरी में पांच दिवसीय कीर्तन महोत्सव के रूप में आयोजित किया गया था। यह आयोजन आचार्य अमृताश्रम स्वामी महाराज के मार्गदर्शन में हुआ। समापन श्री क्षेत्र नारायणगड के मठाधिपति ह.भ.प. प्रेममूर्ति महंत शिवाजी महाराज के काल्याच्या कीर्तन से हुआ।

इस अवसर पर पूर्व मंत्री जयदत्त क्षीरसागर, ह.भ.प. शिवाजी महाराज येवले, ह.भ.प. नारायण महाराज डिसले, मकरंद महाराज, रविंद्र क्षीरसागर, डॉ. विठ्ठल क्षीरसागर, डॉ. योगेश क्षीरसागर, संपादक विजयराज बंब, विलास बडगे, दिनकर कदम, नानासाहेब काकडे, सखाराम मस्के, हेमंत क्षीरसागर, अजित वरपे, बळीराम गवते, सुधाकर मिसाळ, सुभाष क्षीरसागर आदि की प्रमुख उपस्थिति रही।

महंत शिवाजी महाराज ने संत तुकाराम महाराज का अभंग लेकर अपने कीर्तन की शुरुआत की। उन्होंने कहा कि माँ शब्द में अपार शक्ति है। माँ एक ऐसा न्यायालय है जो लाखों अपराधों को माफ कर सकती है। संतान को जन्म देने और उन्हें योग्य बनाने में माता-पिता की पुण्याई जरूरी होती है। अच्छी संतानें पुण्यवान माता-पिता से ही जन्म लेती हैं। उन्होंने स्व. रेखाताई के रामनाम जप, उनके कीर्ति कार्यों की भी सराहना की और कहा कि ऐसे लोगों के पुण्य कार्यों के कारण समाज में ऐसे भक्ति समारोह आयोजित होते हैं।

पूर्व मंत्री जयदत्त क्षीरसागर ने कहा कि मराठवाड़ा के पानी के प्रश्न के समाधान के लिए लगातार प्रयास जरूरी है। समुद्र की ओर बहने वाला पानी यदि रोका जा सका, तो जल संकट का समाधान संभव है। उन्होंने कहा कि आने वाली पीढ़ी के हित में अभी से योजनाबद्ध कार्य करना आवश्यक है और ऐसे ही सामाजिक प्रश्नों को लेकर आगे की राजनीतिक यात्रा तय करनी होगी।

उन्होंने आगे कहा कि राजुरी का अध्यात्मिक वैभव महंत अमृत महाराज के रूप में स्थापित है। उन्होंने स्व. रेखा क्षीरसागर के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि वे परिवार का अभिन्न हिस्सा थीं और उन्होंने अध्यात्म क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। नवगण राजुरी और आसपास के क्षेत्रों में गणपति का विशेष आशीर्वाद है। जैसे महाराष्ट्र में अष्टविनायक हैं, वैसे ही इस क्षेत्र का भी धार्मिक महत्त्व है। महंत शिवाजी महाराज ने अंत में कहा कि हर व्यक्ति के जीवन में संघर्ष होता है। भौतिक सुखों के पीछे भागने से पहले आध्यात्मिक उन्नति जरूरी है। उन्होंने संत तुकाराम और संत ज्ञानेश्वर के संदेशों का उल्लेख करते हुए कहा कि समाज को जोड़ने और जात-पात मिटाने का संदेश इन संतों ने दिया है।

इस अवसर पर डॉ. अरुण भस्मे, रामदास हांगे, आसाराम औसरमल, सुनील पांगारकर, ॲड. बालाप्रसाद करवा, संजय मचाले, अशोक रोमण, सूर्यकांत रायते, तानाजी आगळे, संजय कुलकर्णी, जीवन जोगदंड, प्रा. आबासाहेब हांगे समेत बड़ी संख्या में श्रद्धालु और भक्त उपस्थित थे।

डावी अघाडी के धरणे आंदोलन में सहभागी बनें-प्रा. सुशीला मोराळे

बीड प्रतिनिधि

दिनांक २२ अप्रैल को बीड़ जिले के कचहरी चौक पर डाव्या आघाडी की ओर से प्रचंड धरणा आंदोलन का आयोजन किया गया है। जनसुरक्षा कानून के विरोध में यह एल्गार आंदोलन आयोजित किया गया है, जिसमें सरकार से यह मांग की जा रही है कि इस कानून को वापस लिया जाए। इस आंदोलन में डाव्या आघाडी के लोकतांत्रिक विचारधारा वाले पक्षों के साथ आम जनमानस को भी शामिल होना चाहिए, ऐसा आवाहन किसान संघर्ष समिति की ओर से प्रो. सुशीला मोराळे ने किया है।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार जनता विरोधी कानून लाकर लोकतंत्र को कमजोर करने की कोशिश कर रही है। यह कानून आम नागरिकों के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है और उसे दबाने की साजिश है। कोई भी एकल संस्था इस कानून का विरोध नहीं कर सकती, इसलिए सभी लोकतंत्र समर्थकों को एकजुट होकर इसमें भाग लेना चाहिए।

प्रो. मोराळे ने आगे कहा कि जब अंबेडकरवादी और समाजवादी विचारधारा के लोग लोकतंत्र की रक्षा के लिए एकजुट होते हैं, तभी लोकतंत्र जीवित रह सकता है। उन्होंने आह्वान किया कि इस आंदोलन में बड़ी संख्या में जनसामान्य और संस्थाएं भाग लें।

इंजीनियरों ने भी इस बिल के खिलाफ विरोध दर्ज किया है। उन्होंने याद दिलाया कि भले ही भारत को स्वतंत्रता मिले ७६ साल हो गए हों, लेकिन अब भी कई वर्गों की आज़ादी अधूरी है। इस अवसर पर किसान संघर्ष समिति की ओर से यह अपील की गई है कि २२ अप्रैल को आयोजित होने वाले धरणे आंदोलन में प्रत्येक लोकतंत्र प्रेमी और प्रगतिशील व्यक्ति सक्रिय रूप से शामिल हो।

रबीअ अहमद को मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स नेशनल चैंपियनशिप २०२५ में सिल्वर मेडल, शहर भर में खुशी की लहर

बीड (प्रतिनिधि):

वर्ल्ड बॉक्सिंग काउंसिल, वर्ल्ड मुआय थाई फेडरेशन इंडिया और ऑल इंडिया मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स फेडरेशन इंडिया द्वारा मान्यता प्राप्त प्रो-एमेच्योर कंटेंडर सीरीज़ २ तथा नासिक एमएमए क्लब द्वारा आयोजित मिक्स्ड मार्शल आर्ट्स फाइटिंग नेशनल चैंपियनशिप २०२५ में शेख़ रबीअ अहमद (पुत्र शेख़ अब्दुर्रहीम उर्फ़ गुलाम साक़िब) ने सिल्वर मेडल हासिल किया है।

रबीअ अहमद ने केरल के सियाम वॉरियर फाइट क्लब की ओर से भाग लिया था, जहाँ उनका मुक़ाबला गोवा के रहीम फाइटर फ़ैक्ट्री क्लब के गोल्ड मेडलिस्ट टॉप फाइटर सुनो शर्मा से हुआ। इस कठिन प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए रबीअ अहमद ने सिल्वर मेडल अपने नाम किया।

इस जीत के मौक़े पर आयोजक ज़ैन ख़ान सर (मैनेजिंग डायरेक्टर, हीर एमएमए क्लब, नासिक) और ज़ीशान सर (मैनेजिंग डायरेक्टर, वायपर ३६० क्लब, मुंबई) ने रबीअ अहमद को ट्रॉफ़ी और सिल्वर मेडल देकर सम्मानित किया।

उनकी इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर उनके परिवार, मित्रों और शुभचिंतकों में हर्ष की लहर दौड़ गई है। बज़्म-ए-अहबाब उर्दू अदब के सरपरस्त नदीम मिर्ज़ा, मुअतज़ा अली, अरशद सिद्दीक़ी, चाँद अकबर (घूमता आईना, गुलबर्गा), सुलतान अख़्तर (सोलापुर), इदारा जमाल नदीम तथा शहरनामा बीड़ की ओर से उन्हें दिल से बधाई दी गई।

गुलाम साक़िब और उनके सुपुत्र रबीअ अहमद को इस शानदार सफलता पर दिल की गहराइयों से मुबारकबाद दी गई है और उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए दुआएँ की गई हैं।

दैनिक तामीर ने भी इस गौरवपूर्ण सफलता पर रबीअ अहमद को दिली मुबारकबाद पेश करता है।

गुस्ताखी माफ: देश की चिंता छोड़कर शरबत जिहाद में उलझे रामदेव!

अशफाक शेख
वरिष्ठ पत्रकार, सहारा समय, औरंगाबाद

अरे भाइयों, क्या आपको पता है कि चीन कहाँ पहुंच गया है? शायद नहीं! क्योंकि हमें इसकी चिंता नहीं है हमारी चिंता का विषय तो बाबा रामदेव का शरबत जिहाद है! देश में फैलती नफरत की आग हमारी एकता को जला रही है और हम चुप हैं।

हाल ही में बाबा रामदेव टीवी पर अपने शरबत उत्पादों का प्रचार कर रहे थे। उन्होंने देश में विश्वसनीय यूनानी उत्पाद देने वाली कंपनी हमदर्द के रूह अफजा के बारे में जो बयान दिया, वह शर्मनाक था। उन्होंने कहा कि यह शरबत खरीदोगे तो मस्जिद और मदरसे बनेंगे। अरे बाबा! मतलब अब शरबत के बहाने भी हिन्दू-मुस्लिम करोगे? क्या इस स्तर तक गिर चुके हो?

शायद यह दुनिया का पहला व्यापारी होगा जिसने इतने नीच स्तर पर जाकर अपने उत्पाद का प्रचार किया हो। और बेहिचक यह भी कहता है – अब यह शरबत जिहाद है! क्या यह वही भारत है जो कभी 'सर्वधर्म समभाव' की मिसाल हुआ करता था? क्या अब हम मस्जिदें, कब्रें और शरबत के नाम पर देश की एकता को तोड़ेंगे?

हमदर्द का इतिहास शायद इन 'लालाओं' को पता नहीं।

१९०६ में हकीम अब्दुल मजीद ने इस यूनानी कंपनी की नींव रखी थी। १२० वर्षों में रूह अफजा, साफी, जोशीना और रोगन बदाम शिरीन जैसे उत्पाद भारत ही नहीं, विदेशों में भी घर-घर में लोकप्रिय हुए। यह विश्वास और गुणवत्ता का प्रतीक है। और अगर आप उससे मुकाबला नहीं कर सकते, तो हीनभावना के कारण इस तरह की नफरत फैलाना क्या उचित है?

अब चीन की तरफ देखिए –

वह पिछले ५० वर्षों से निरंतर प्रगति पर है। जब अमेरिका के सनकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने १४५% टैरिफ लगाया, तब भी चीन झुका नहीं। बल्कि आत्मसम्मान के साथ जवाब दिया – हमें फोन मत करना, हम खुद संपर्क करेंगे। यह है आत्मगौरव। और हम?

हम शरबत और कब्रों में उलझकर देश की प्रगति और एकता का कबाड़ा कर रहे हैं।

चीन ने अपनी ताकत कैसे बढ़ाई?

उन्होंने अनुसंधान, नवाचार और भ्रष्टाचार-मुक्त व्यवस्था को प्राथमिकता दी। आज उनका -ख मॉडल उहरींत्रझढ को टक्कर दे रहा है। इधऊ कारों ने टेस्ला को पीछे छोड़ दिया है। उनकी बैटरियां विश्व की सबसे भरोसेमंद हैं। चीन का राष्ट्रपति शी जिनपिंग कहता है – हमें दुनिया में नंबर वन बनना है। और हमारे नेता...?

हमारे वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल आज भी कहते हैं कि राजीव गांधी के नीति निर्णयों की वजह से देश पीछे रह गया। लेकिन सवाल ये है कि आप पिछले ११ वर्षों से सत्ता में हैं, तो आपकी मेक इन इंडिया और स्किल इंडिया योजनाओं ने कौनसे चमत्कार किए?

अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कहां खड़े हैं हम?

आज अमेरिका और चीन का व्यापार विश्व का आधा हिस्सा नियंत्रित करता है। अमेरिका का वैश्विक ऋझ्झ में हिस्सा २४% है, चीन का १४%, और हमारा सिर्फ ५%।

१९९९ में जब अमेरिका-नाटो ने बेलग्रेड स्थित चीनी दूतावास पर हमला किया था, तब अमेरिका को माफी मांगनी पड़ी थी। और हमारे बेरोजगार युवाओं को अमेरिका जैसे देश शरण नहीं देते, बल्कि वापिस भेज देते हैं – और हमारे विश्वगुरु कोई विरोध भी नहीं करते। यही अंतर है।

चीन के मोबाइल ब्रांड्स – तळीं, क्वींगुशळ, ठशवाळ – का भारत में ८०% बाजार पर कब्जा है।

हमारा चीन के साथ व्यापार १०० अरब डॉलर के पार जा चुका है, जबकि हम केवल २०% निर्यात करते हैं। २०२४ में व्यापार घाटा ८५% तक बढ़ गया है। सोचिए चीन कहाँ और हम कहाँ? हमारे पास टैलेंट है, लेकिन उसका सम्मान नहीं हमारा टैलेंट विदेशों में पैसा और भविष्य तलाशता है। हजारों उच्च शिक्षित युवा हर साल देश छोड़ रहे हैं। हम आज भी ड्रोन, मोबाइल बैटरी जैसी बुनियादी तकनीक में पिछड़े हैं। और हमारे देश में रामदेव जैसे लोग शरबत के नाम पर नफरत फैला रहे हैं।

हम चार सौ साल पुरानी नफरत निकाल रहे हैं, जबकि दुनिया भविष्य की ओर भाग रही है। हमारी क्रयशक्ति और ऊर्जा व्यर्थ हो रही है। यह भारत के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

(जय हिंद)

दैनिक भारत की तामीर अखबार के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक काजी मखदूम शफीउद्दीन ने आरएम प्रिंटरर्स, बार्शी रोड, बीड 431122 महाराष्ट्र में मुद्रित कर के दैनिक तामीर, नगर परिषद परिसर, बशीर गंज, बीड, महाराष्ट्र कार्यालय से प्रकाशित किया है। मोबाइल : 9270574444 ईमेल : hinditameer@gmail.com वेबसाइट : www.dailytameer.com

daily Bharat ki tameer newspaper owner printer publisher editor Quazi makhdoom shafiuddin has printed at RM printers barshi road beed 431122 Maharashtra at published at office daily tameer nagar parishad complex Bashir gunj beed Maharashtra. Mobile : 9270574444 Email : hinditameer@gmail.com Website : www.dailytameer.com